पाठ-8

परमेश्वर आपकी चिन्ता करेगा

परमेश्वर के बारे में यह सीखें :

जो परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं परमेश्वर उनकी चिन्ता करता है।
जब हम परमेश्वर से कहते हैं: "धन्यवाद" तो वह प्रसन्न होता है।
हम परमेश्वर को भेंट चढ़ाने के लिए कहते हैं, "आपको धन्यवाद।"

इसे अपनी बाइबल में से पढ़ें

इसे पाँच बार ज़ोर-ज़ोर से पढ़ें :

वर्षा चालीस दिन और चालीस रात निरन्तर पृथ्वी पर होती रही।.....और जल पृथ्वी पर अत्यन्त बढ़ गया, यहाँ तक कि सारी धरती पर जितने बडे-बड़े पहाड़ थे सब डूब गये। केवल नूह और जितने उसके संग जहाज़ में थे, वे ही बच गए।" उत्पत्ति 7:12, 19. 23. "मैंने बादल में अपना मेघ धनुष रखा है वह मेरे और पृथ्वी के बीच का चिन्ह होगा.....। तब ऐसा जल प्रलय फिर न होगा जिससे सब प्राणियों का विनाश हो।" उत्पत्ति 9:13. 15.

क्या आप यह कर सकते हैं?

सही उत्तर वाले शब्दों पर गोला बना दें :

1. कितने दिनों तक वर्षा हुई?	चार	दस	चालीस
2. जहाज़ के बाहर कितने लोग जीवित बच गये?	सब	दस	कोई नहीं
3. परमेश्वर ने नूह को कौन सा चिन्ह दिया?	मेघधनुष		तारागण

उत्तर

1. चालीस 2. कोई नहीं 3. मेघ धनुष

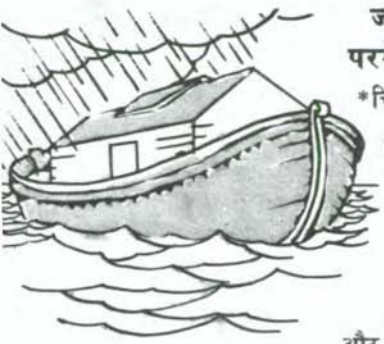

जो परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं परमेश्वर उनकी चिन्ता करता है।

चिन्ह के सब शब्दों को रेखांकित करें :

जैसे-जैसे बाढ़ का पानी बढ़ने लगा वैसे ही वैसे जहाज ऊपर उठता गया। यह जल ही जल के ऊपर तैरता रहा जिसने पृथ्वी को ढाँप लिया था। *नूह और उसकी पत्नी और उसके तीनों पुत्र और उनकी पत्नियाँ जहाज में सुरक्षित थे।*

जानवर भी सुरक्षित थे। उनके पास खाने को भोजन था। भूसा और चारा, बीज और गिरीदार फल। अनाज और सरस फल। *परमेश्वर और नूह ने जानवरों की सुधि ली।*

चालीस दिन और रात वर्षा हुई। तब परमेश्वर ने पृथ्वी को सुखाने के लिए तीव्र पवन बहाई। धीरे-धीरे पानी घटने लगा। जहाज एक ऊंचे पर्वत की चोटी पर जा टिका और वहीं ठहर गया।

जब तक भूमि सूख न गई नूह और उसका
परिवार जहाज़ में ही रहा।
वे पूरे वर्ष तक जहाज़ में रुके रहे।
*परमेश्वर ने जहाज़ में उनकी सुधि ली। *

अन्त में पृथ्वी सूख गई। नूह ने
जहाज़ का दरवाज़ा खोला।
प्रत्येक जन जहाज़ में से निकल
कर सूर्य के प्रकाश में आ गया,
नूह और उसका परिवार, सब
जानवर और पक्षीगण।

हाथी आनन्द से चिंघाड़ उठे।
बन्दर पहले से भी अधिक ज़ोर से
फुटकटाने (चहकने) लगे।
शेर अपनी पूंछें ऐंठ कर गरजने लगे।
सब ही जहाज़ में से सुरक्षित बाहर निकल
आने के कारण खुश थे।

इसके बारे में सोचिए

क्या आप कभी तूफ़ान में भयभीत हुए या घबराए हैं?
वहाँ आपकी सुधि लेने वाला कौन था?
किसने नूह की, उसके परिवार के जनों और जानवरों को
बचाने में सहायता की थी? आपकी सुधि लेने (चिन्ता करने)
के लिए आपके माता पिता की कौन सहायता करेगा? कौन अनाज,
पेड़-पौधों को बढ़ाता है कि आपको खाने के लिए भोजन
प्राप्त हो? क्या आप अपने भोजन के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं?
या तूफ़ानों (मुसीबतों) में आपकी सुधि लेने के लिए?
या प्रतिदिन आपको सुरक्षित रखने के लिए?

परमेश्वर प्रसन्न होता है जब आप कहते हैं: "आपको धन्यवाद"

नूह ने सबसे पहिली बात यह की कि उसने परमेश्वर से कहा "आपको धन्यवाद।" *नूह ने परमेश्वर को धन्यवाद दिया क्योंकि परमेश्वर ने उसकी उसके परिवार की और सब जानवरों और पक्षियों की चिन्ता (सुधि ली) की थी। * नूह ने साफ़ और नये संसार में रहने के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया। नूह ने परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए बलि चढ़ाई और कहा "परमेश्वर आपको धन्यवाद"

परमेश्वर प्रसन्न था क्योंकि नूह ने कहा, "आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।" परमेश्वर ने नूह से प्रतिज्ञा की, "अब मैं पृथ्वी को फिर जल प्रलय से नाश न करूँगा।"* मेघ धनुष परमेश्वर की प्रतिज्ञा का चिन्ह है।* जब आप मेघ धनुष देखते है तो स्मरण कर परमेश्वर आपकी चिन्ता करेंगे।।

हम परमेश्वर को यह कहने के लिए भेंट चढ़ाते हैं, 'आपको धन्यवाद'

हम परमेश्वर के घर (भवन) को अपनी भेंट ले जाते हैं। जब आप ईश्वर को धन्यवाद की भेंट देते हैं तब "परमेश्वर आपको धन्यवाद" कहने के लिए इस प्रार्थना को सीख लें:

प्रार्थना

हे परमेश्वर मैं आपका धन्यवाद करता हूँ क्योंकि
हर बात में आप मेरी चिन्ता करते हैं।
घर के लिए, भोजन के लिए और पहिनने के लिए वस्त्रों के लिए।
प्रत्येक बातों के लिए धन्यवाद देने हेतु मैं जो छोटी (थोड़ी)
भेंट लाया हूँ उसे ग्रहण करें।